“ऋता शुक्ल की कहानियों में स्त्री विमर्श : एक अध्ययन”

रॉंची विश्वविद्यालय, रॉंची से पीएच० डी० उपाधि हेतु
प्रस्तावित शोध प्रबंध की रूपरेखा

मानविकी संकाय

हिन्दी विभाग
2023

शोध निर्देशिका

डॉ० मंजु लाल
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग
डोरण्डा महाविद्यालय, रॉंची
रॉंची विश्वविद्यालय, रॉंची

शोधार्थी

भुसकु कुमारी
मो0 नं. : 7484883131

ऋता शुक्ल की कहानियों में स्त्री विमर्श : एक अध्ययन

1. प्रस्तावना :

स्त्री विमर्श एक तरह का साहित्यिक आंदोलन है जिसके केंद्र में समानता का अधिकार स्त्री अस्मिता अस्तित्व स्वंतत्रता और मुक्ति का सवाल है। इन सभी को संग्रहित रूप में रखकर स्त्री विमर्श की शुरूआत हुई हैं।

हिंदी साहित्य में अस्मितामूलक विमर्श के अंतर्गत स्त्री विमर्श मुख्य धारा का विमर्श रहा हैं। इसमें लिंग को मुख्य आधार बनाया गया हैं।

ऋता शुक्ल की कहानियों में ग्रामीण स्त्रियों का संघर्ष अपने पितृसतात्मक समाज के विरोध में देखने को मिलता हैं। सुप्रसिद्ध कथाकार ऋता शुक्ल की कहानियाँ कलुष के अँधेरे को भेदती शुभ कर्मो की उजास है, करूणा और प्रेम का संतुलन हैं। पीड़ा के शूलों में सुख के फूल खिलाना इनकी विशेषता हैं। इनता ही नहीं, जीवन के हर ताप का अमृतोपम उपचार है ये कहानियाँ। इनका जन्म 14 नवंबर 1949 को डिहरी ऑन सोन में हुआ।

कहानी का शाब्दिक अर्थ है कहना कहानी एक सोद्देश्य रचना है जो जीवन के किसी एक अंग या जीवन के किसी एक भाग को प्रदार्शित करता हैं तथा लघु होते हुए भी अपने आप में पूर्ण होता है। कहानी के 6 तत्व होते है

1. कथावस्तु अथवा अथानक
2. कथोपकथन अथवा संवाद
3. चरित्र चित्रण
4. देशकाल—वातावरण
5. भाषा—शैली और शिल्प
6. उद्देश्य

लम्बे समय तक पुरूष की दासता के विरोध में स्त्री के अधिकारों को लेकर उठायी गयी आवाज स्त्री विमर्श है। समाज में पुरूष को जो भी सहूलियतें प्रदान की गयी हैं उनमें से कुछ स्त्री ने अपने लिए भी माँगनी प्रारंभ कर दी हैं। जिनमें लैंगिक समानता, समान वेतन, यौन उत्पीड़न का विरोध, भेदभाव, घरेलु हिंसा का विरोध आदि मुद्दे प्रमुख हैं। समाज में स्त्री केवल एक गिनती बनकर नहीं रहना चाहती बल्कि वह पुरूष की तरह केन्द्र में आने को ललायित हैं इसी आधार पर उसने अपने अस्तित्व की लड़ाई आरंभ कर दी हैं।

यह सच है कि पिछले दो सौ वर्षों में स्त्रियों ने बहुत से क्षेत्रों में काफी तरक्की की है। कुछ औरतों के लिए कुछ सामाजिक बंधन भी कम हुए हैं। कुछ कानून भी बदले है। हमारे संविधानों ने काफी हद तक औरतों को बराबरी का दर्जा दिया है परंतु इन सब के बावजूद आज भी लगभग हर देश में स्त्रियों को न समान अधिकार है और न पूरी आजादी है। आज भी लगभग हर जगह पुरूष सता का बोलबाला हैं।

ऋता शुक्ल की कहानियों में नारीवाद :– अंरुधति (उपन्यास), अग्निपथ (उपन्यास), बाँधों न नाव इस ठाँव (उपन्यास), कनिष्ठा उँगली का पाप, कितने जन्म वैदेही (उपन्यास), कब आओगे महामना (उपन्यास), कथा लोक नाथ की (उपन्यास)। (कहानी संग्रह)– क्रोंचबध, शेषगाथा कथान्तरण, मृत्यु गंध–जीवन गंध, कासों कहों मैं दरदिया, मानुस तन, कृतियों की लेखिका तथा भारतीय ज्ञानपीठ युवा कथा सम्मान, लोकभूषण सम्मान, राधाकृष्ण सम्मान आदि से सम्मानित डॉ० ऋता शुक्ल की रचनाएँ एक ऐसे यात्रा– क्रम का स्मरण दिलाती है, जहाँ भारतीय संस्कृति का लोक राग, संपूर्ण राष्ट्र की संवेदना मानवीय करूणा की

अनगिनत लकीरें हैं। डॉ० ऋता शुक्ल की ज्यादातर कहानियों में भारतीय ग्राम संस्कृति का भाव – विछल स्वर मिलता है। इनकी रचनाएँ पीढियों का अंतराल उपेक्षित बुजुर्ग, उपेक्षा संत्रास झेलती स्त्रियाँ आदि चरित्र उनकी कहानियों की कथात्मक भूमि रही हैं।

एक लेखिका होने के नाते डॉ० ऋता शुक्ल ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्री की दशा दूर्दशा और उसके संघर्षमयी जीवन–गाथा को सहृदयता के साथ अपने कथा साहित्य में वर्णित किया हैं। उनकी कहानियों में एक ओर जहाँ असहाय और पीड़ित स्त्री जीवन चित्रित है, वहीं दूसरी ओर संघर्ष और प्रतिकार करती आधुनिक स्त्रियाँ भी मौजूद है। कहानी कनिष्ठ उँगली का पाप, में नीलाभ रंजन की अम्मा का चरित्र गढतें हुए लेखिका ने कितनी गहराई से चित्र खीचा हैं – 'काली किनारी' की सफेद मारकीन वाली साड़ी पहनकर अम्मा इस कमरे से उस कमरे में बेमतलब डोलती रहती। दादी को सभालकर उन्हें गीता के श्लोक सुनाती। अम्मा कैसी लगती थी लेकिन इतिहास पुराणविद् नीलाभ रंजन अब समझ सकते हैं अब वे बतासकते है। इस कहानी में दर्शाया गया है कि नारी अपने आपको मिटाकर पुरूष की उस संकल्प शक्ति को सार्थक बनाती हैं। उसका दायित्व पुरूष से लक्ष गुणा अधिक हैं।

आज भी 'स्त्री' को लेकर हमारा समाज भयंकर हीनता बोध से ग्रस्त है और स्त्रियों के प्रति शोषण व अत्याचार, शारीरिक व मानसिक हिंसा जारी है।

'कासों कहों मैं दरदिया' कहानी में एक स्त्री जो बाबुल की अँगनाई में लुकाछिपी घो–घो रानी, रूमाल चोर खेलने वाली उम्र को असमय सयानापन सौंपनेवाली नियति बहुत कुछ दर्द बया करता है। किस तरह से छोटी उम्र में माँ बनना उपर से एक पुत्री को जन्म देना सबसे बड़ी दु:ख की घड़ी थी अरूणा के लिए। ऋता शुक्ल ने कथा लोकनाथ की उपन्यास में दिखाई हैं कि

अकल्पनीय यंत्रणा झेलते शरीर–मनवाले लोकनाथ की यह कथा हर उस कलमव्रती की पीड़ा का साक्षात्कार है, जो अपने सपनों के संसार को सत्य की आकृति देने के लिए आकुल – व्याकुल रहता है। ऐसी पारसमणियों को भी अंतर्दाह झेलना होता हैं।

ग्रंथो के संसार में निवास करने वाले आत्मा को लौकिकता का दंश मिलना ही है। एक ओर अकूत भौतिक समृद्धि और दूसरी ओर ज्ञान–संपदा को ही सर्वस्व मानने की मनस्विता। विषकीट से संबंधों की ज्ञान गुमानियों की तितीक्षा भारतीय संस्कृति के लोकराग से जुड़ी भोगवादी मनोवृति से कोसों दूर कलरव से युध्द करती ये संज्ञाए।

2. शोध कार्य की प्राक्कल्पना :

ॠता शुक्ल कि कहानियों में अपने परिवेश में निहित व्यष्टिगत एवं समष्टिगत समस्याओं को उकेरा है और जनमानस को सोचने के लिए मजबूर किया है, प्रेम विवाह, स्त्री – पुरुष संबंध, व्यक्ति के अंतर्द्वन्द्व अस्तित्व की रक्षा तथा व्यक्ति मन से संबंधित समस्याओं का चित्र उनकी कहानियों में विद्‌यमान हैं इन्ही बिन्दुओं को दृष्टिगत रखकर मैंने 'ॠता शुक्ल की कहानियों में स्त्री विमर्श : एक अध्ययन' को अपने शोध का विषय बनाया है।

3. शोध की प्रासंगिकता :

एक कथाकार के रूप में डॉ० ॠत्ता शुक्ल की कहानियाँ नारीवाद की पुरोधा हैं। नारीवाद सामाजिक आंदोलन और विचारधाराओं की एक श्रृंखला है, जिसका उद्देश्य लिंगों की राजनीतिक, आर्थिक, व्यक्तिगत और सामाजिक को परिभाषित और स्थापित करना हैं। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित होगा। कि डॉ० ॠता शुक्ल के स्त्रीपात्र नारीवादी आंदोलन की उग्रता धारण नही करती, वरन् सहज नारीत्व के साथ अपना हक माँगती नजर आती है, यही कारण है

कि दांपत्य जीवन के संगिनी रूप में भी वे अपना दायित्व निष्ठापूर्वक निभाती नजर आती है। उनका मानना है कि स्त्री और पुरूष में समानता का उद्घोष तब होगा जब दानों के बीच परस्पर प्रेमपूर्ण सम्वाद और समभाव पनपेगा।

4. शोध की सीमा :

हमारे शोध के जरिये ऋता शुक्ल जो स्वतंत्रोतर काल के स्त्रियों का तस्वीर प्रस्तुत करने वाली रचनाधर्मी हैं। ऋता शुक्ल के कहानियों को शोध का विषय बनाने में मुझे बहुत गर्व महसूस होता है। एक ऐसी लेखिका जो स्त्रियों के मान सम्मान के लिए काहनियों द्वारा जागरूक कर रही हैं। मैं इस शोध कार्य से एक नया रूप देने की कोशिश करूँगी। मैं अपने शोध कार्य को लगभग पाँच वर्ष के अंदर सम्पूर्ण करने की कोशिश करूँगी। उनके कहानी के माध्यम से मैं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आए परिवर्तनों को राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से समाज में निहित कुण्ठा, आक्रोश, संघर्ष को उद्घाटित करूँगी।

5. शोध प्रविधि :

मेरा यह शोध कार्य ऋता शुक्ल द्वारा लिखित एवं प्रकाशित कहानियों पर आधारित होगा। इस शोध कार्य के दौरान विभिन्न पुस्तकालयों एवं पत्र–पत्रिकाओं को अवलोकन किया जाएगा। अपने शोध कार्य के दौरान विभिन्न विद्वानों से ऋता शुक्ल के कहानियों में निहित तत्वों पर विचार विमर्श कर उनकें कथा वस्तुओं और स्त्री विमर्श की यथार्थ चित्रण करूँगी। मैं अपने इस शोध विषय के पूरा करने के लिए समाजशास्त्रीय विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक दृष्टिकोण अपनाउँगी। उन युवा वर्ग एवं स्त्री – पुरूष से साक्षात्कार करूँगी और अपने इस शोध विषय को प्रभावित करने की कोशिश करूँगी जिन्होनें उन कहानियों में चित्रित विषय वस्तु में किया है। उन लेखकों से भी मिलने का प्रयास करूँगी जिन्होंने अनेक समस्याओं को अपन रचनाओं में शामिल किया है।

इस कार्य के संपादन हेतु मुझे ऋता शुक्ल के कहानियों सहित संबंधित विश्वसनीय तथ्यों सूचनाओं आंकड़ों आदि को संकलित करने एवं अध्ययन पद्धति को स्पष्ट करने हेतु निम्नलिखित शोध प्रविधियों का सहारा लेना पड़ सकता हैं :–

(क) सर्वेक्षण विधि

(ख) साक्षात्कार

(ग) लेखों आलेखों के अध्ययन से

(घ) सहायक सामग्री

(ड.) आलोचनात्मक पद्धति

(च) पुस्तकावलोकन

6. शोध साहित्य की समीक्षा :

हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में ऐसी अनेक अविस्मरणीय सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्टताएँ सबकों अपनी ओर आकृष्ट करती हैं। ऋता शुक्ल का संम्पूर्ण कहानियाँ सामाजिक जीवन से संबंधित अनेक प्रकार की समस्याओं के गंभीरता के साथ हमारे सामने प्रस्तुत करती है। नारी समस्या स्त्री – पुरुष संबंध प्रेम और विवाह संयुक्त परिवार का विघटन आदि को उन्होंने कथा साहित्य के अतंर्गत एक व्यापक भूमिका में स्पष्ट कि हैं सामाजिक जीवन की गहराई में प्रवेश कर उन्होनें अपनी सजगता एवं प्रगतिशील बोध का परिचय देते हुए मौजूद परिस्थितियों, परंपरागत धारणाओं और मान्यताओं में सामंजस्य ढूढने का प्रयास कि हैं। ऐसा सामंजस्य जो व्यक्ति और समाज के भविष्य की रक्षा कर सके ठीक उसी प्रकार मेरे द्वारा प्रस्तावित यह शोध कार्य 'ऋता शुक्ल की कहानियों में स्त्री विमर्श एक अध्ययन' को सामने लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। जहाँ तक मुझे मालूम पड़ता है कि मैं जो शोध विषय करने वाली हूँ उस विषय पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है अगर कार्य हुआ भी है। तो मैं इसे अपने नजरिये से देखना चाहूँगी।

7. शोध की परिकल्पना :

वर्तमान समय में देखा जाय तो स्त्रियों के साथ संतुष्ट वाली स्वतंत्रता आज भी प्राप्त नहीं हुआ हैं 19 वी सदी में स्त्रियों का हलात जिस प्रकार गंभीर था अब उसके तुलना में काफी सुधार आई है परंतु आज भी नारी जीवन का दर्द कम नहीं हुआ हैं मैं भी एक स्त्री हूँ और इस दर्द ने मेरा भी पीछा नहीं छोडा हैं। इन्हीं दर्दों से जुझते हुए जब मैं एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की और मैंने यह निश्चय किया कि मुझे अपने या फिर मानवीय जीवन के तमाम परिस्थितियों एवं उलझनों को समझने के लिए ऋता शुक्ल के कहानियों से अच्छा और कोई विकल्प नहीं हो सकता और तभी मैंने ऋता शुक्ल के कहानियों के प्रति अपना ध्यान आकर्षित करती चली गई और यहीं से मुझे शोध कार्य करने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई। मैंने साहित्य में अनेक रचनाएँ पढी। उनमें कई लेखक लेखिकाओं के साहित्य ने मुझे प्रभावित किया। ऋता शुक्ल द्वारा लिखित कहानियों के माध्यम से स्त्री विमर्श को समझ लेने के बाद मैं इनकी रचनाओं की ओर उन्मुख हुई। यही कारण है कि कहानियों में मेरा लगाव हमेशा से सक्रिय रहा है। इसी क्रम में मैंने ऋता शुक्ल के कुछ कहानियों का अध्ययन किया तभी मैंने निश्चय किया भविष्य में मैं ऋता शुक्ल की कहानियों को ही शोध का विषय बनाउँगी मेरा यह सफल प्रयास रहेगा कि उनके कहानियों मे अंकित नवीन पहलुओं एवं तथ्यों को प्रकाश में लाऊँ जो भविष्य के लिए एक नवीन दृष्टिकोण की स्थापना होगी।

8. शोध का उद्देश्य :

शोध एक उद्देश्यपूर्ण एवं सुव्यवस्थित प्रक्रिया है। बदलते परिवेश के कारणों की जटिलताओं संघर्षो को अभिव्यक्त करने की कोशिश की जायेगी। जिसके द्वारा हम किसी सैद्धान्तिक अथवा व्यवहारिक समस्या के समाधान को ढूँढने का प्रयास करते हैं। किसी भी शोध का मुख्य उद्देश्य होता हैं तथ्यों की

पहचान करना सत्य की खोज करना एवं नवीन ज्ञान की प्राप्ति करना। किसी भी विषय पर शोध करते समय हमेशा हमें नई चीजों को सीखने का मौका मिलता हैं। शोध एक ऐसा क्षेत्र हैं जिसमें हमेशा ही सुधार की गुंजाइश रहती है ठीक उसी तरह ऋता शुक्ल के कहानियों में भी स्त्री विमर्श सामाजिक आर्थिक विषय वस्तु के साथ कहानी कार की आस्था और उनके कहानियों में छुपे रहस्यों को उजागर करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य होगा।

इस समय स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में कड़वाहट की स्थिति पैदा हो रही। युवा वर्ग अपने कर्तव्य के रास्ते से भटकते नजर आ रहे हैं देखा जाय तो स्त्रियों के आज भी पहले की रतह पारिवारिक दायित्व का निर्वहन करना पड़ रहा है। स्त्रियाँ अपनी मर्जी से कुछ भी नहीं कर सकती इन्हीं तमाम परिस्थितियों को सामने लाते हुए हिन्दी कहानिकारों ने सामज एवं व्यक्ति की विभिन्न गतिविधियों को अपनी कहानियों के माध्यम से समझने का प्रयास किया हैं। जिन्हें पढ़कर हम विभिन्न बिन्दुओं को समझ सकते हैं हमारा यह शोध विषय बदलते हुए स्त्री – पुरूष सम्बंध या स्त्री संघर्ष की स्थिति के बारे में हम इन कहानियों के माध्यम से दिखाने का प्रयास करूँगी।

9. भविषय में शोध कार्य होने की संभावनाएँ :

मेरे द्वारा प्रस्तावित यह शोध विषय आने वाली नवीन पीढियों को शोधकार्य करने में उत्साहित कर सकती हैं एवं एक नया विचार प्रकट कर सकती हैं। ऋता शुक्ल के कहानियों को देखते हुए ऐसा लगता हैं कि यह हर शोध कार्य के लिए सक्षम हो सकता हैं नवीन दृष्टिकोण से सभी मूल्यांकन को प्रशस्त कर सकता है यह एक शोध का विषय बनाया जा सकता हैं।

10. शोध कार्य हेतु अध्याय वर्गीकरण :

प्रथम अध्याय : हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास

क) प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी का इतिहास

ख) प्रेमचंद युगीन हिन्दी कहानी का इतिहास

ग) प्रेमचंदत्र्योतर हिन्दी कहानियाँ

घ) हिन्दी कहानियाँ और महिला कथाकार

द्वितीय अध्याय : ऋता शुक्ल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

क) ऋता शुक्ल का जीवन परिचय

ख) ऋता शुक्ल का रचना संचार

ग) ऋता शुक्ल के पुरस्कार एवं सम्मान

तृतीय अध्याय : ऋता शुक्ल की कहानियों में स्त्री विमर्श

क) ऋता शुक्ल की कहानियों में नारी मनोविश्लेषण

ख) ऋता शुक्ल की कहानियों में नारी का सामाजिक स्वरूप

ग) ऋता शुक्ल की कहानियों पर ग्रामीण जीवन का प्रभाव

घ) ऋता शुक्ल की कहानियों में आधुनिकताबोध

चतुर्थ अध्याय : ऋता शुक्ल की कहानियों की कहानी कला

क) ऋता शुक्ल की कहानियों में कथावस्तु की विविधता

ख) ऋता शुक्ल की कहानियों में पात्र योजना

ग) ऋता शुक्ल की कहानियों में संवाद योजना

घ) ऋता शुक्ल की कहानियों में भाषा शैली

पाँचम अध्याय : ऋता शुक्ल की भाषा शैली एवं शिल्प

उपसंहार

ग्रंथ सूची

क) संदर्भ सूची

ख) सहायक ग्रंथों की सूची

नोट : अत्यावश्यक होने पर सूची में आंशिक परिवर्तन संभव हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कितने जन्म वैदेही : ऋता शुक्ल, प्रकाशन प्रभात प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष 1995
2. मानुस तन : ऋता शुक्ल, प्रकाशक, प्रतिभा प्रतिष्ठान, प्रकाशित, वर्ष 1999
3. कासौ कहो मैं दरदिया : ऋता शुक्ल, प्रकाशक, प्रभात प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष 2004
4. अरूंधती : ऋता शुक्ल प्रकाशक : सत्साहित्य प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष : 2004
5. कब आओगें महामना : ऋता शुक्ल प्रभात प्रकाशन दिल्ली प्रकाशक 2008
6. कथा लोक नाथ की : ऋता शुक्ल, प्रभात प्रकाशन 1 जनवरी 2018 असफअली रोड़ नई दिल्ली
7. कनिष्ठा उँगली का पाप : ऋता शुक्ल प्रकाशन : दिल्ली ज्ञान गंगा 1994

सहायक ग्रथों की सूची

(क) हिन्दी कथा साहित्य – डॉ० गोपाल राय

(ख) आधुनिक हिन्दी कहानी– लक्ष्मी नारायण लाल

(ग) नई कहानी की भूमिका – कमलेश्वर

(घ) कहानी स्वरूप और संवेदना राजेन्द्र यादव

(ड.) स्त्री विमर्श बनाम नारी अस्मिता डॉ० अशोक सभ्रबवाण

च) उपनिवेश में स्त्री – प्रभा खेतान

पुस्तकालय –

1. पुस्तकालय सेंट्रल लाइब्रेरी मोराबादी, राँची
2. इन्टरनेशनल लाइब्रेरी क्लब रोड़, राँची

पत्र पत्रिकाएँ –

1. हंस पत्रिका – राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली 1966
2. आजकल पत्रिका – प्रवीन कुमार उपाध्यय दिल्ली 1945
3. पहला पत्रिका ज्ञान रंजन
4. www. शोध गंगा
5. www. गध साहित्य

बेब सामग्री – इसमें दस्तावेज, डेटा, ई – सेवाएँ ऑडियों वीडियों फाइलें शामिल हैं।

टिप्पणी – उपर्युक्त तथ्य प्रथम एवं अंतिम नहीं हैं।